International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 10-09-2020; Accepted: 25-09-2020; Published: 11-10-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 86-90

एक लेखिका की संघर्ष गाथा: पिंजरे की मैना

मिथिलेश कुमारी

पूर्व शोधार्थी जवाहरलाल नेहरू विश्व विद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश

आत्मकथा किसी एक व्यक्ति विशेष के समग्र जीवन की रचना अवश्य है परन्तु उस व्यक्ति के साथ जुड़े समाज, स्थान, वर्ग और जाति विशेष का परिचय भी हमें अवश्य मिलता है। किसी के जीवन की घटनाएँ और परिस्थितियाँ अलग-अलग हो सकती हैं, संघर्ष और वर्गीय चरित्र अलग हो सकते हैं परन्तु उसमें समाज के दर्शन अवश्य होते हैं। आत्मकथा में कल्पना, स्मृति और इतिहास होता है। जीवन के सुख-दुःख, संघर्षों के बीच जीते-जागते मनुष्य की प्रतिक्रिया और उसका वजूद होता है। मैंने इस लेख में चन्द्रकिरण सौनरेक्सा की आत्मकथा का विश्लेषण किया है। एक रचना को एक लेख में नहीं समेटा जा सकता। एक रचना के कई विस्तृत और व्यापक पहलू होते हैं लेकिन इस आत्मकथा के मूल तत्व को अवश्य यहाँ रेखांकित करने की कोशिश की गई है। इसके लिए रचना से कुछ सन्दर्भ भी दिए गए हैं। मैंने यहाँ आत्मकथा से सम्बंधित कई साहित्यकारों की परिभाषाओं को भी दिया। आत्मकथा क्या है और इसका स्वरुप क्या होता है, इस पर संक्षिप्त विचार किया है। इस शोध लेख में स्त्री जीवन की विडम्बनाओं से जुड़े पहलू सामने आये हैं।

मूल शब्द: आत्मकथा, संघर्ष गाथा, चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, पिंजरे की मैना, इतिहास, स्मृति, मध्यवर्गीय स्त्री, साहित्यकार आदि

प्रस्तावना

आत्मकथा किसी एक व्यक्ति विशेष के समग्र जीवन की रचना अवश्य है परन्तु उस व्यक्ति के साथ जुड़े समाज, स्थान, वर्ग और जाति विशेष का परिचय भी हमें अवश्य मिलता है। किसी के जीवन की घटनाएँ और परिस्थितियाँ अलग-अलग हो सकती हैं, संघर्ष और वर्गीय चरित्र अलग हो सकते हैं परन्तु उसमें समाज के दर्शन अवश्य होते हैं। आत्मकथा में कल्पना, स्मृति और इतिहास होता है। जीवन के सुख-दुःख, संघर्षों के बीच जीते-जागते मनुष्य की प्रतिक्रिया और उसका वजूद होता है। आत्मकथा में सामजिक संबंधों और आत्मकथाकर से जुड़े चरित्रों की शिनाख़्त अवश्य होती है। आत्मकथा के अध्ययन से संघर्ष करने की प्रेरणा और सामाजिक बुराइयों से मुक्ति का रास्ता भी मिलता है। इतिहास और स्मृति के संबध के बारे में मैनेजर पाण्डेय लिखते हैं- "इतिहास उनका होता है जो विजयी होते हैं, जो पराजित होते हैं, वे और उनकी आवाज़ भी यहाँ तक कि उनकी चीख भी इस तरह दबा दी जाती है कि इतिहास और भविष्य उसे भूल जायें। स्मृति की ज़रूरत और सार्थकता उन दबी हुई आवाजों को खोजने, पहचानने और आमने सामने लाने में है।"[1] स्मृति ही आत्मकथा का आधार होती है लेकिन कौन सी बात लेखक उजागर करता है, यह उस पर निर्भर करता है। हालांकि विभिन्न विद्वानों ने आत्मकथा की अलग-अलग परिभाषाएं दी हैं। "आत्मकथा लेखन एक तरह से स्वकाया में पुनर्प्रवेश है।"[2] ये पुनर्प्रवेश स्मृतियों के आधार पर होता है आत्मकथा का आधार स्मृतियाँ होती हैं। आत्मकथा का क्या महत्व है, वह क्यों लिखी जाए? नंददुलारे बाजपेयी की चिट्ठी का जवाब देते हुए प्रेमचन्द ने लिखा है कि "अब रह गयी बात कि हिंदी में ऐसे लिखने वाले कितने हैं जिनकी जीवनी हिंदी जनता की पथ नियामिका बन सकती है? आपका ख्याल है कि एक भी नहीं। मेरा ख्याल है मेरे घर में मेहतर के जीवन में भी कुछ ऐसे रहस्य हैं जिनमें हमें प्रकाश मिल सकता है।... किसी भी मनुष्य का जीवन इतना तुच्छ नहीं है जिसमें बड़े से बड़े महच्चरितों के लिए भी कुछ न कुछ विचार की सामग्री न हो। महाच्चरित्र इसी तरह बनते हैं।" [3]

आत्मकथा साहित्य की एक ऐसी विधा है जिसमें जीवन सत्य उजागर होता है जबकि अन्य विधाओं में सूत्र रूप में हम जीवन देख पाते हैं। मैनेजर पाण्डेय ने लिखा है "मैं श्रेष्ठ आत्मकथा का एकमात्र गुण मानता हूँ उन अन्तरंग,अनछुए और लगभग अकथनीय प्रसंगों का अन्वेषण जो व्यक्ति की कहानी को विश्वसनीय और आत्मीय बनाते हैं।"[4] मैनेजर पाण्डेय विश्वसनीयता, प्रमाणिकता और अंतर्मन में दबी भावनाओं, विचारों के उजागर को आत्मकथा का गुण मानते हैं। आत्मकथा में कितना सच है इसकी प्रमाणिकता की जाँच तो अवश्य होनी चाहिए।

शोध-विस्तार

चन्द्रकिरण सौनरेक्सा के अनुसार "जीवन-यात्रा तभी समाज के लिए उपयोगी होगी। जब इस यात्रा में पाठक को समाज, युग या मनुष्य का वर्णन रसमय और वास्तविक रूप से प्रतिबिंबित मिले और उसे पढ़कर पाठक उन बुराइयों के प्रति सचेत हो जो समाज को पिछड़ापन देती हैं।"5 सौनरेक्सा आत्मकथा की रोचकता और सामाजिकता की बात करती हैं। मनुष्य समाज में निर्मित होता है, मनुष्य का चरित्र आत्मगत कम सामाजिक ज़्यादा है। व्यक्तित्व का विकास समाजीकरण की प्रक्रिया में होता है। पूर्वजों से मिले संस्कार अचेतन में जड़ जमाये रहते हैं। लिंग, जाति, धर्म, वर्ग, आर्थिक, समाजिक स्तर व्यक्तित्व को भिन्न बनाते हैं। यहाँ तक कि दो स्त्रियों की आत्मकथा में कुछ समानता होते हुए भी भिन्नता होती है।

इनकी आत्मकथा ने ही इन्हें एक बार फिर साहित्यिक जगत में पुनर्जीवित किया। सौनरेक्सा की पहली कहानी 'अछूत'11 वर्ष की उम्र में 1931 में बाल पत्रिका 'विजय' में छपी। मोटे तौर पर 1931से 1980 तक इनका लेखन-काल मान सकते हैं। सौनरेक्सा ने अपनी आत्मकथा को बहुत ही सरल और सहज भाषा में प्रस्तुत किया है, जिस प्रकार गाँव का कोई बुजुर्ग अपने जीवन की कथा कह रहा हो, ठीक उसी प्रकार इन्होंने अत्यंत साहस के साथ अपने जीवन के हर पक्ष को खोलकर सामने रख दिया है। "गहन साहस के साथ क्रूरतम सत्य को कह डालने की प्रव्रत्ति को स्त्री चेतना के प्रतिफल के रूप में देखा जाना चाहिए।"6

अपनी जीवन की छोटी बड़ी हर घटना, परिस्थिति, अनुभव, संघर्ष, उलझन, परेशानी के बारे में उन्होंने लिखा है। उनकी आत्मकथा में रसोईघर से लेकर दूसरों के सुख-दुःख, सामाजिक क्रियाकलापों सभी का वर्णन किया है।

इनकी आत्मकथा को पढ़कर ऐसा लगता है कि एक मध्यवर्गीय स्त्री का जीवन चलचित्र की तरह उपस्थित हो। बहुत ही बेबाकी और निष्पक्षता से उन्होंने अपने जीवन के हर छोटे ब्योरे का वर्णन करते हुए व्यापक चित्र खींचा है। दूसरी बात सारी घटनाएं क्रमबद्धता से दर्ज की गयी हैं। इससे कथा में प्रवाह बना रहता है। उनकी आत्मकथा विविध पक्षों और व्यापक सामजिक संरचना को समेटे हुए है। सबसे बड़ी बात वे घरेलू स्थिति, पारिवारिक सम्बन्धों के ताने-बाने को भी उजागर करती हैं। "आत्मकथा स्वयं और अन्य के पारस्परिक सम्बन्ध को खोजने और विश्लेषित करने का सजग माध्यम हो सकती है। किसी की आत्मकथा दूसरे के नितांत भिन्न-भिन्न अनुभव संसार से हमें जोड़ती है। वह संसार जिसे हम बिलकुल नहीं जानते। हम एक व्यक्ति के अस्तित्व के साथ- साथ सामूहिक अस्तित्व से जुड़ते चलते हैं। इस प्रक्रिया में निजी प्रसंग कब सामूहिक अवचेतन की वाणी बन जाते हैं पता ही नहीं चलता।"7

सौनरेक्सा का जीवन भी घर परिवार के बन्धनों में बीता। उन्होंने संयुक्त परिवार की जिम्मेदारियों को निभाते हुए अपना साहत्यिक कर्म किया। सौनरेक्सा ने जो भी लिखा है वह उनकी दृष्टि से देखा गया और अनुभूत किया गया यथार्थ है। गौरतलब है कि चन्द्रकिरण के समकालीन रचनाकारों में से बहुत कम लोगों ने अपनी आत्मकथा लिखी। आंदोलनों के दौर सुधारों का काल साम्प्रदायिक दंगे, भारत विभाजन और उसके बाद के दौर तथा अपने सम्पर्क में आये अनेक कलाकारों, कवियों-कवयित्रियों, लेखकों का परिचय देते हुए अन्य सराहनीय और सद्भावपूर्ण प्रसंगों का भी ज़िक्र किया है।

दादा के वंश के परिचय से अपनी आत्मकथा शुरू करती हैं फिर अपने माँ-पिताजी के साथ रहते हुए वह किस प्रकार पढ़ाई-लिखाई करती है, इसका वर्णन करती हैं। चंद्रकिरण को बचपन से ही किताबें पढ़ने का बहुत शौक़ था। अपने पिता के रहते बड़े भाई के विरोध के बावजूद वह स्कूल में पढ़ती रहीं। आठवीं कक्षा में थी कुछ दिन स्कूल गयी थी फिर माँ की बीमारी के कारण नहीं जा सकी परन्तु मेरठ के दोनों पुस्तकालयों की सारी पुस्तकें पढ़ डाली, ऊषाकाल, चन्द्रकान्ता, चन्द्रकान्ता संतति, शरत का सम्पूर्ण अनुदित साहित्य, रवीन्द्रनाथ के अनूदित उपन्यास,गाँधी जी की आत्मकथा, बंकिम ग्रंथावली और भी अन्य किताबें आदि। अपनी माँ की मृत्यु के बाद उनका स्कूल जाकर पढाई करने का स्वप्न भी अधूरा रह गया। "मै मातृहीन हो गयी। स्कूल पढने जाने का स्वप्न भी उनके साथ ही जल गया। तेरहवीं वाले दिन एक-दो शुभचिन्तकों ने चिंता व्यक्त की- बुढ़ापे में बाबूजी को इस लड़की के कारण बड़ी परेशानी उठानी पड़ेगी। सयानी हो चली है, घर में कोई स्त्री नहीं है।"8

स्त्री की पवित्रता और यौन–शुद्धता के नाम पर हिन्दू समाज ने ऐसे सामाजिक नियम बना दिए कि वह स्त्री के सम्पूर्ण विकास को ही बाधित कर देता है। इसी कारण स्त्रियों को बहुत सीमित दुनिया देखने के अवसर मिलते हैं, उनके व्यक्तित्व का ही विकास नहीं हो पाता, न ही स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में कभी समानता आ पाती है। बचपन से ही इस अंतर का बीज बोया जाता है जिससे एक स्वस्थ समाज विकसित होने की अपेक्षा दो अतिरेकों का निर्माण होता हैं। ऐसी कई घटनाओं का ज़िक्र इस आत्मकथा में आया है।

मनुष्य की चेतना पर सामाजिक नियम इतना हावी हैं कि वह बंदी होकर रह गया है, कुछ विवशता का अनुभव करते हैं और कुछ तो आजीवन जान ही नहीं पाते कि वे आत्महंता की स्थिति में हैं, परन्तु इसका सबसे विपरीत प्रभाव स्त्रियों पर पड़ता हैं। महादेवी वर्मा ने भी लिखा है- शताब्दियों पर शताब्दियाँ बीती चली जा रही हैं, समय की लहरों पर परिवर्तन पर परिवर्तन बहते आ रहे हैं, परिस्थितियाँ बदल रही हैं, परन्तु समाज केवल स्त्री को जिसने दासता के अतरिक्त और कुछ देना नहीं सीखा, प्रलय की उथल पुथल में भी शिला के समान स्थिर देखना चाहता है। ऐसी स्थिरता मृत्यु का श्रृंगार हो सकती है, जीवन का नहीं।"9

महादेवी जी का यह कथन आज भी सत्य है, जिस प्रकार से स्त्रियों के

लिए नये-नये रास्ते खुले हैं उसी के समानांतर शोषण के तरीके भी बदलते रहे हैं। किसी एक के जीवन लक्षणों के आधार पर सभी के जीवन की सैद्धांतिकी नहीं विकसित की जा सकती परन्तु कई आत्मकथाओं का अध्ययन करें और जीवन के अपने अनुभवों को भी देखें तो प्रतीत होता है कि स्त्री की स्वतन्त्रता पर हर क्षण पहरा है। चन्द्रकिरण ने स्वयं भारत भारद्वाज से बातचीत में कहा था कि "मेरी आत्मकथा पिछले आठ दशकों की महिलाओं के जीवन संघर्ष का एक छोटा सा प्रारूप है।"10

चन्द्रकिरण की आत्मकथा पढ़कर यह बात सच प्रतीत होती है क्योंकि उनकी आत्मकथा में उनसे जुड़े अन्य अनेक लोगों की विशेषताओं का उल्लेख हुआ है। बचपन में चन्द्रकिरण जी जितना बेबाक होती हैं बाद में उसी बेबाकी को स्वयं कुंद करने की कोशिश करनी पड़ी, क्योंकि इस समाज ने लड़कियों को देश, समाज के बहुत से कार्यों में भाग लेने की मनाही कर रखी है। अपने पिता से वह कांग्रेस के जलसों में भाग लेने की इच्छा व्यक्त करती परन्तु वह तब बहुत छोटी थीं। उन्होंने महात्मा गांधी पर एक गीत भी लिखा था। पिता के स्नेह से वह काफी कुछ पढ़ ली लेकिन सबसे बड़े भाई रूढ़िवादी मानसिकता के थे। वह तो अपने माँ -पिता के रहते ही अपनी बहन के आठवीं कक्षा में रोज मंझले भाई के साथ स्कूल साईकिल में बैठकर जाने के विरोध में थे उनका कहना था- "तो अब इतनी सयानी लड़की बाजार में साइकिल में बैठकर आया-जाया करेगी। लोग क्या कहेंगे?"11

अपने जीवन की नीरसता, बोझिलता और पढ़ने की ललक को अन्दर ही अन्दर घोटती वह बहुत बेचैन रहतीं। ऐसे समय वह अपने पिता के स्नेह को याद करती। लड़कियों के लिए उनका अपना घर बिना माँ बाप के जेलख़ाना बन जाता हैं ।इस त्रासद स्थिति को उन्होंने बचपन में झेला इसीलिए आगे जाकर अपने पति के अपमानजनक व्यवहार का घूँट भी पीती रहीं । उन्होंने लिखा हैं "आज लगता हैं मेरे लिए जीवन रुक गया है न कुछ पढ़ने को, न कोई सारगर्भित देश ,समाज या साहित्य सम्बन्धी चर्चा करने वाला साथ, क्योंकि भाई भाभी लोग अपने अपने परिवार के साथ रम जाते, रह गयी मैं पिजरें की मैना, खाने पीने पहनने और कमाने की कोई चिंता नहीं एक सामान्य लड़की को और क्या चाहिए! पर मेरी पढ़ने, घर परिवार के अतिरिक्त अन्य विषयों पर व्यक्तियों से चर्चा करने की ललक, घर की चारदीवारी से बाहर दुनिया देखने की इच्छा- मेरे अन्तः करण को बेचैन करती रहती। कहानी भी तब लिखी जाती, जब कोई घटना या समस्या मेरे सामने होती। बंद पिजरें में कैद मैना की फड़फड़ाहट का अनुमान लगाना हर एक के बस की बात भी नहीं। व्यक्तिगत रूप से मैं बहुत ही सादे- लिबास में, सीधा-सादा, अपनी जिम्मेदारियों को निभाते हुए, एकाकी जीवनयापन कर रही थी। मेरा एक ही शौक़ था पढना-लिखना, उसी से मैं वंचित थी।"12

इस ऊब और अकेलेपन को झेलते तथा बड़े भाई के कड़े अनुशासन में रहते हुए वह अपना जीवन-यापन कर रही थी, परन्तु इस परिस्थिति में भी वह हमेशा अपने पढ़ने-लिखने के रास्ते तलाश करती रहतीं।

चन्द्रकिरण सौनरेक्सा की आत्मकथा में वे सारे प्रसंग आये हैं जो एक लिंग विशेष (स्त्री) पर थोपी गयी पाबंदियों को दिखाते हैं और चूंकि मध्यवर्ग सामन्ती संस्कारों को ज्यादा वहन करता है। वे हमेशा बड़ी भाभी के साथ रहते हुए पुस्तकों के लिए तरसती रहीं। ऐसा नहीं है कि उनके भाई समर्थ नहीं थे परन्तु वह साहस सौनरेक्सा में नहीं था, जो भाई से पुस्तके लाने के लिए कहतीं। मध्यवर्गीय समाज में जब बड़े भाई से बात न करना संस्कार माना जाता है तो बात करने की सामर्थ्य वह कहाँ से लाती? अपने पिता से वह अपने मन की सारी बातें कर लेतीं थीं क्योंकि वह अपनी बेटी का समर्थन करते थे। उनके पिता ने अपनी बेटी को पढ़ाने-लिखाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी वह उनको बचपन में रसोई में भी नहीं जाने देते थे और अपनी बेटी की शादी भी जल्दी नहीं करना चाहते थे। चन्द्रकिरण लिखती हैं। "घर पर माँ को बस एक बात सताती कि मुझे अब तक घर के काम, ख़ास तौर से खाना बनाने में कोई रूचि नहीं थी। उस वक्त घरों में बारह साल की लड़की, बड़ी सयानी समझी जाती थी, जिसे घर के सारे काम-काज आने चाहिए।"13

विवाह के तीन वर्ष बाद ही हंस के सम्पादक अमृतराय के प्रशंसा-पत्र से कान्तिचन्द्र सौनरेक्सा ने चन्द्रकिरण सौनरेक्सा को जो गाली दी उस अविश्वास ने उन्हें बहुत आहत किया, वह घर छोड़ने का इरादा बना चुकी थीं। यह जीवन में पहली बार था जब उन्हें किसी ने गाली दी थी। वह लिखती हैं- "मै रसोईं में बैठी सोच रही थी- क्या इस तरह गाली खाने के लिए मैं स्वयं को तिलतिल खपा रही हूँ। मैंने एक ऐसे व्यक्ति का साथ चुन लिया था, जो शक के चश्में से ही सब कुछ देखता हो। यहाँ मै दस बीस रूपये बचाने के लिए मील भर पैदल चलती थी। अविश्वास के इस भयावह अन्धकार ने जैसे मुझे दिशाहीन कर दिया था। वह रात मेरे लिए मृत्यु से भी भयावह थी।" 14

इस अपमान, क्रोध को वह अपनी एक वर्ष की बेटी के लिए पी जाती हैं। उन्हें लगा कि कुंतल को ननिहाल का प्यार मिलेगा परन्तु ददिहाल का नहीं । अतः वह घर छोड़कर जाने का निश्चय त्याग देती हैं। ये निर्णय सिर्फ़ बच्चो के कारण नहीं लिया गया था बल्कि मायके में भी किसी प्रकार का सहारा नहीं था। एकाकी जीवन चुनने की अपेक्षा ज़िंदगी भर का दर्द उन्होंने चुन लिया। कितनी विचित्र बात है वह इस गाली के सम्बन्ध में एक शब्द भी नहीं कहती लेकिन इस तरह की स्थिति दुबारा न पैदा हो इसके लिए वह दूसरा निश्चय करती हैं कि कहानियाँ लिखकर अपने पति को दे देंगी जहाँ भेजना हो भेजें। यह ऐसा निर्णय था जो इनके लिए घातक सिद्ध हुआ। इस बात का अहसास उन्हें बाद में होता है परन्तु वे हमेशा अपने निश्चय पर कायम रहीं। वह लिखती हैं- "शायद यही वह सबसे आदर्शवादी, पतिव्रता-पत्नी का निर्णय था- जिसकी कीमत मेरे पूरे साहित्यिक जीवन ने चुकाई और लगभग गुमनामी के कगार पर अभिशप्त सरस्वती के वरदान सी मैं खड़ी हूँ।"15

जिस चन्द्रकिरण की सृजनता को वह अवरुद्ध करते हैं वही चन्द्रकिरण हर बुरे वक़्त में कान्तिचन्द्र के साथ खड़ी रहीं। कान्तिचन्द्र के तीन चार विवाहेतर संबंधों को भी झेला और ये सारे सम्बन्ध उनके प्रादेशिक सरकारी नौकरी में रहते हुए बने। चन्द्रकिरण उनसे स्पष्ट बात भी करती हैं, परन्तु फिर कान्तिचन्द्र माँफी मांगकर ऐसा न करने का बार-बार आश्वासन देते हैं, परन्तु ऐसा कुछ नहीं होता। यही चन्द्रकिरण की विवशता है कि वह बार- बार इस अपमान के दंश को झेलने पर भी प्रतिरोध नहीं करतीं। जिस लड़की सावित्री को वह एक दिन रात में घर लेकर आते हैं और अपनी पत्नी को दूसरे कमरे में सोने के लिए भेजते हैं। उस घटना के बारे में चन्द्रकिरण लिखती हैं- उस कमरे का एक दरवाजा गैलरी में खुलता था, उससे मैं गैलरी में आ गयी और भीतर से द्वार बंद हो गया। क्रोध, अपमान और आत्मग्लानि से मेरा तन - मन जल रहा था। आंसू नहीं थे आँखों में। मैं किसी भी कमरे में जाती तो बात खुल जाती, गैलरी में अखबार रखे थे, उन्हीं को बिछाकर द्वार पर टेक लगा कर बैठ गयी बीच- बीच में ऊँघ भी गयी हूँगी।"16

इस प्रकार चन्द्रकिरण ही अपने बच्चों को इस प्रकार के प्रभावों से बचाती फिरती हैं और परिवार के इज्ज़त का दारोमदार वही उठाती हैं। कभी कान्तिचन्द्र को यह अहसास क्यों नहीं हुआ कि वह अपनी पत्नी की गरिमा का इतना ख्याल तो रखें ? चन्द्रकिरण द्वारा प्रतिरोध न करना और चुपचाप अपने पति की आज्ञा मान लेना उनकी कमजोरी है। हालांकि जिन लड़कियों को बचपन से ही दूसरों की ख़ुशी के अनुसार निर्णय लेना सिखाया जाता है, उनमें प्रतिरोध करने की क्षमता नहीं आ पाती। लड़कियों में बचपन से ही दूसरों का ख्याल रखना, अपने पति की बात मानना और सेवा भावना सिखाई जाती है और यह अवचेतन में इस कदर पैठ बना लेता है कि इस सोच से बाहर निकलने का सोचने पर भी अपराध-बोध का अहसास उन्हें होने लगता है। प्रतिरोध करने का साहस बहुत कम स्त्रियाँ ही जुटा पाती हैं क्योंकि ये समाज तो उन्हें व्यवस्थागत नियमों से बाहर निकलने पर पल-पल दंड देता है।

चन्द्रकिरण हर सुख-दुःख,आर्थिक तंगीं में भी अडिग रहीं। सावित्री के साथ सम्बन्धों को लेकर कान्तिचन्द्र पहले निलंबित हुए फिर केस हारने पर नौकरी भी चली गयी। उस समय चन्द्रकिरण ने लखनऊ आकाशवाणी में काम खोजा। आकाशवाणी में वह महिला एवं बाल विभाग में बतौर पटकथा-लेखिका नियुक्त हुई थीं। उन्होंनें 1956 से 1980 तक आकाशवाणी लखनऊ में काम करके अपना घर चलाया तथा अपने बच्चों को पढ़ाया-लिखाया। नौकरी से बर्खास्त होने के बाद ही कान्तिचन्द्र ने चन्द्रकिरण से साफ़ कह दिया था कि वह खर्च के लिए उनसे पैसे की उम्मीद न करें। सौनरेक्सा का जीवन नौकरी घर के चक्कर में ही चलता रहा, इसी के साथ उनका लेखन कार्य भी चलता रहा। घर नौकरी सारी जिम्मेदारियों को निभाते हुए पढने-लिखने का समय कहाँ मिलता था, वह सुबह चार बजे से साढ़े पांच बजे तक लिखतीं "चूल्हें अंगीठी पर दाल चढ़ाकर वहीं बैठे बैठे भी दो चार पृष्ठ लिख लेती। दोबारा व्यवस्थित करने का समय न मिलता तो कहानी का पहला ड्राफ्ट ही पत्रों में भेज देती। बुक पोस्ट कर देतीं।"17

चन्द्रकिरण बहुत ही कम समय में बिना किसी अतिरिक्त सुविधा के कहानियाँ लिखती रहीं। रचनाशीलता ही एक ऐसा क्षेत्र था जहाँ वह पूरी तरह स्वयं को अभिव्यक्त कर पातीं थीं। चन्द्रकिरण एक माँ के रूप में बेहद सफल रहीं। उनके सभी बच्चों ने अपनी योग्यतानुसार पढ़ाई की, नृत्य और संगीत की शिक्षा भी उन्होंने अपनी बेटियों को दिलाई। दूसरी बेटी कल्पना ने प्रेम विवाह किया। बड़ा बेटा अमेरिका में इंजीनियर है, छोटा बेटा एयर-इण्डिया में पायलेट के पद से सेवानिवृत्त होकर किसी कंपनी में कार्यरत हैं। दो बेटियाँ भी प्रवक्ता थीं। अपने बच्चों के कहने पर ही उन्होंने अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर अपनी आत्मकथा लिखी। उन्हें अपने सभी बच्चों का स्नेह प्राप्त हुआ। वे स्वयं कमाते हुए भी अपनी ज़रूरतों को उपेक्षित करती रहीं। उन्होंने हमेशा दूसरों का ध्यान रखा, कम संसाधनों में उन्होंने गृहस्थी चलायी। दूसरी बात कान्तिचन्द्र की आय भी इतनी नहीं थी कि घर का सामान्य खर्च भी चल सके, चन्द्रकिरण के काम करने के उपरान्त ही राशन, फल ,सब्जी, और किराया पूरा हो पाता था, तब उनको अपने कपड़ों के लिए पैसे कहाँ से बचते, परन्तु कान्तिचन्द्र ने अपनी ज़रूरतों को नहीं सीमित किया बल्कि कई बार अपने कार्यों से आर्थिक संकट ही खड़ा किया, परन्तु इस त्याग, सहनशीलता के बदले चन्द्रकिरण को अपमान, पीड़ा और दुःख मिला। वह मन में उड़ने की उमंग लिए भी क़ैदी रहीं। कान्तिचन्द्र जैसे पुरुष हमारे समाज में अनगिनत हैं। चन्द्रकिरण मध्यवर्गीय स्त्री का प्रतिनिधि चरित्र प्रतीत होती है। इस प्रकार उनका रचना कर्म जीवन संघर्ष के साथ चलता रहा है।

एक स्त्री को अगर त्याग, समर्पण, सहयोग के बदले उम्रक़ैद और अपमान ही पग-पग पर मिलता है तो सभी को सोचने की ज़रूरत है कि हम कैसा समाज निर्मित कर रहे हैं जहाँ स्त्रियों को कूड़े-करकट से भी तुच्छ समझा जाता है। ऐसी स्थिति में स्त्रियों को विकसित होने का अवसर दिए जाने की और पुरुषों को ज़्यादा संस्कारित किए जाने की ज़रूरत है। हम 21 वीं सदी में इससे भी कहीं ज़्यादा त्रासद स्थितियों को देख रहे हैं जहाँ बलात्कार की समस्या ख़तरनाक क्रूरता में बदलती जा रही है। अनगिनत स्त्रियों/लड़कियों के साथ बलात्कार

और हत्या की घटनाएँ घट रही हैं। यह इस बात का सबूत है कि न ही हमने बीमारी की सही शिनाख्त की, न ही इलाज़।

सन्दर्भ सूची

1. मैनेजर पाण्डेय, हंस, जुलाई 2004, पृ.34
2. गरिमा श्रीवास्तव, आलोचना, अक्टू-दिस. 2009,पृ.23
3. पंकज चतुर्वेदी,आत्मकथा की संस्कृति, वाणी प्रकाशन, 2003, पृ.23
4. मैनेजर पाण्डेय का लेख, हंस, जुलाई 2004, पृ.33
5. चन्द्रकिरण सौनरैक्सा, पिंजरे की मैना, पूर्वोदय प्रकाशन, 2010, पृ.6
6. गरिमा श्रीवास्तव का लेख, आलोचना, अक्टू-दिस. 2009, पृ.95
7. वही, पृ.92
8. चन्द्रकिरण सौनरैक्सा,पिंजरे की मैना, पूर्वोदय प्रकाशन, 2010, पृ.105
9. महादेवी वर्मा,श्रृंखला की कड़ियाँ,राधाकृष्ण प्रकाशन,1995, पृ.187
10. भारत भारद्वाज, उड़ गई पिंजरे की मैना, नया ज्ञानोदय, जून 2009, पृ.9
11. चन्द्रकिरण सौनरैक्सा,पिंजरे की मैना, पृ.100
12. वही, पृ.152
13. वही, पृ.95
14. वही, पृ. 221-222
15. वही, पृ. 224
16. वही, पृ. 302-303
17. वही, पृ.214